MTTP–004

सिंधी–हिंदी–सिंधी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम (पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.)

अनुवाद परियोजना

(जनवरी 2026 और जुलाई 2026 सत्रों में
प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

अनुवाद अध्ययन और प्रशिक्षण विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

सिंधी–हिंदी–सिंधी अनुवाद परियोजना

(एम.टी.टी.पी.-004)

(जनवरी 2026 और जुलाई 2026 सत्रों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.

जैसा कि आपको बताया जा चुका है कि 'सिंधी–हिंदी–सिंधी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा' (पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.) कार्यक्रम को पूरा करने के लिए आपको चार–चार क्रेडिट के छह पाठ्यक्रम तथा छह–छह क्रेडिट के दो अनुवाद परियोजना कार्य करने होंगे। इस स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम का चौथा (एम.टी.टी.पी.–004) और आठवाँ पाठ्यक्रम (एम.टी.टी.पी.–005) 'अनुवाद परियोजना' का है। इन सभी पाठ्यक्रमों का क्रम इस प्रकार है :

पाठ्यक्रम कोड एवं शीर्षक		क्रेडिट
एम.टी.टी.–001	भारतीय भाषाओं में अनुवाद	4
एम.टी.टी.-041	सिंधी–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन	4
एम.टी.टी.–042	सिंधी–हिंदी के विविध क्षेत्रों में अनुवाद	4
एम.टी.टी.पी–004	**सिंधी–हिंदी–सिंधी अनुवाद परियोजना**	**6**
एम.टी.टी.–043	अनुवाद सिद्धांत और सिंधी–हिंदी–सिंधी अनुवाद परंपरा	4
एम.टी.टी.–044	अनुवाद प्रक्रिया और प्रविधि : सिंधी–हिंदी–सिंधी का संदर्भ	4
एम.टी.टी.–045	हिंदी–सिंधी के विविध क्षेत्रों में अनुवाद	4
एम.टी.टी.पी–005	**हिंदी–सिंधी–हिंदी अनुवाद परियोजना**	**6**

प्रस्तुत अनुवाद परियोजना कार्य (एम.टी.टी.पी.-004) सिंधी–हिंदी–सिंधी अनुवाद से संबंधित है। इस परियोजना के अंतर्गत आपको दी गई सामग्री का हिंदी/सिंधी में अनुवाद करना है। अनुवाद के लिए सामग्री संलग्न है। इसका अनुवाद करके आपको मूल्यांकन के लिए प्रस्तुत करना है। ध्यान रहे कि यह 'अनुवाद परियोजना' एक स्वतंत्र पाठ्यक्रम के समकक्ष है। इसमें उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

परियोजना करने का तरीका

प्रस्तुत सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें। इससे आप समझ जाएँगे कि यह किस विषय से संबंधित है और इसमें प्रमुखतया क्या कहा गया है। इसके बाद आप इस सामग्री में से वे शब्द और मुहावरे आदि छाँटिए जिनका अर्थ अथवा जिनके हिंदी/सिंधी पर्याय आपको पता नहीं हैं। इन शब्दों को एक कागज़ पर नोट कर लीजिए। ध्यान दीजिए कि अनूद्य सामग्री के अनुवाद करते समय आपको कौन–कौन से कोश देखने की जरूरत है। विषय के अनुरूप समुचित कोशों में से उन शब्दों के पर्याय नोट कर लीजिए।

अब अनूद्य सामग्री को एक बार पुनः पढ़िए। गौर कीजिए कि अब की बार यह आपको ज्यादा अच्छी तरह समझ आती है कि नहीं। यदि कोई अंश समझ में न आ रहा हो तो उसे फिर से पढ़िए और पता लगाइए कि कठिनाई कहाँ है – शब्दों का अर्थ समझने में अथवा वाक्य–विन्यास को समझने में। यदि कोई वाक्य न समझ आ रहा हो तो उसे दूसरी बार, तीसरी बार पढ़िए।

इस सामग्री में प्रयुक्त संक्षिप्तियों पर ध्यान दीजिए। उनके पूर्ण रूप क्या हैं, जानने की कोशिश कीजिए। अधिकांश संक्षिप्तियों के पूर्ण रूप आपको इस सामग्री में ही मिल जाएँगे।

इस तरह अनूद्य सामग्री का अर्थ भली–भाँति समझ लेने के पश्चात उसका अनुवाद आरंभ कीजिए। अनुवाद करते समय भी शब्दकोश का भरपूर उपयोग कीजिए। जिन शब्दों के अर्थ आपको पता हैं उनके लिए भी शब्दकोश देखिए ताकि विषय और संदर्भ के अनुकूल पर्यायों का चयन कर सकें। वाक्य–विन्यास लक्ष्य भाषा (अर्थात् हिंदी/सिंधी) की प्रकृति के अनुसार कीजिए। यानी आपका बनाया वाक्य ऐसा लगे कि आप अनुवाद नहीं कर रहे बल्कि उस भाषा में मूल रूप में लिख रहे हैं। ऐसा तभी होगा जब आपकी वाक्य–रचना स्रोत में कही गई बात का अनुकरण न होकर लक्ष्य भाषा की कथन–शैली के अनुरूप और सहज होगी।

एक पैराग्राफ अथवा एक पृष्ठ का अनुवाद करने के बाद अपने अनुवाद को मूल सामग्री से मिलाइए और देखिए कि आपके अनुवाद का वही अर्थ निकल रहा है जो मूल कथन में कहा गया है। यदि अंतर दिखाई दे तो अपने अनुवाद में सुधार कीजिए। पूरी तरह आवश्स्त होने के बाद अनुवाद को आगे बढ़ाइए। अगले पैराग्राफ/पृष्ठ के अनुवाद के बाद फिर यही जाँच–प्रक्रिया दोहराइए और अनुवाद करते जाइए।

अनुवाद पूरा करने के पश्चात उसे एक बाद फिर मूल सामग्री से मिलाइए और जाँच कीजिए कि आपका अनुवाद और मूल सामग्री समान अर्थ प्रकट करते हैं। यह भी जाँच कीजिए कि कहीं कोई पैराग्राफ, वाक्य अथवा वाक्यांश अनुवाद होने से छूट तो नहीं गया है। तत्पश्चात अनूदित सामग्री को साफ–साफ लिखकर हस्तलिखित रूप में लिखिए अथवा टंकण की व्यवस्था कीजिए।

अनुवाद परियोजना की प्रस्तुति

- अनुवाद परियोजना फुलस्केप आकार के कागज पर पर्याप्त हाशिया छोड़ते हुए एक तरफ टंकित कराके और बाइडिंग कराके प्रस्तुत करें।
- अनूदित परियोजना के आरंभिक पृष्ठ पर आपके इस कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम कोड और शीर्षक, नामांकन संख्या, नाम, पता, अध्ययन केंद्र का कोड लिखा होना चाहिए और अंत में आपके हस्ताक्षर एवं प्रस्तुति की तिथि का इस प्रकार उल्लेख होना चाहिए :

कार्यक्रम का शीर्षक :	**सिंधी–हिंदी–सिंधी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.)**
पाठ्यक्रम कोड :	एम.टी.टी.पी.–004
पाठ्यक्रम का शीर्षक :	सिंधी–हिंदी–सिंधी अनुवाद परियोजना
अध्ययन केंद्र का नामः	....
नामांकन संख्या :	....
नाम :	....
पता :	....
	....
हस्ताक्षर :	....
तिथि :	....

- अनुवाद परियोजना के साथ एक **प्रमाण–पत्र भी लगाएँ** जिसमें आप अपने हस्ताक्षर सहित यह प्रमाणित करें कि आपने यह अनुवाद–कार्य स्वयं किया है और इसके लिए किसी व्यक्ति की सहायता नहीं ली गई है।

- **अनुवाद परियोजना विश्वविद्यालय में निम्नलिखित पते पर व्यक्तिगत रूप से/पंजीकृत डाक द्वारा भेजें** :
  कुलसचिव
  विद्यार्थी मूल्यांकन प्रभाग (SED)
  इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
  मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

अनुवाद परियोजना प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि

जनवरी 2026 में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए : **30 नवंबर, 2026**
जुलाई 2026 में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए : **30 जून, 2027**

अंतिम तिथि के बाद भेजी गई परियोजना का मूल्यांकन विलंब से होगा और आप इस अध्ययन कार्यकम को देर से पूरा कर सकेंगे।

कृपया ध्यान दें :

प्रस्तुत की गई अनुवाद परियोजना की एक प्रति (फोटोकॉपी) अपने पास अवश्य रख लें।

शुभकामनाओं सहित।

इस अनुवाद परियोजना कार्य के दो प्रकार के अनुच्छेद दिए गए हैं, जिनका आपको अनुवाद करके प्रस्तुत करना होगा। इनमें से 9 अनुच्छेद सिंधी भाषा में दिए गए हैं। इन अनुच्छेदों का आपको हिंदी में अनुवाद करना है। इस अनुवाद परियोजना कार्य के अंत में हिंदी का एक अनुच्छेद दिया गया है, जिसका आपको सिंधी अनुवाद करना है।

1

सिंधी अदब या साहित्य जी शुरूआति उन ज़माने खां वठी थी, जडहिं खां सिंधी बोली पंहिंजी अलगि ऐं निराली सुञाणप क़ाइमु कई। उहो दौरु डहीं इस्वी सदीअ जे आसिपासि आहे। उन ज़माने में मौजूदह सिंधु इलाइक़े जे बोलीअ में हिक तर्फ़ि प्राकृत ऐं अपभ्रंश बोलियुनि जूं ख़ासियतूं घटि थींदियूं वेयूं बिए तर्फि उचारनि ऐं व्याकरणी बीहक जे ख़्याल खां अहिड़ियुनि नयुनि ख़ासियतुनि जो विकासु थियो, जिनि सिंधु इलाइके जे बोलीअ खे, बियुनि भरवारियनि बोलियुनि (पंजाबी, गुजराती, राजस्थानी, मराठी, हिंदी वगैरह) खां हिक निराली ऐं अलहदी सञापण बि डिनी। उन ज़माने जे सिंधी बोलीअ खे 'झूनी सिंधी' सडियो बञे थो। वक़्तु गुज़िरंदे उन झूनी सिंधीअ जे रूप में बि फेरो ईंदो वियो, जंहिंजूं साबितियूं असांखे पंद्रहीं–सोरहीं ईस्वी सदीअ खां वठी हासिलु थींदड़ सिंधी लिखयतुनि मां मिलनि थियूं।

सिंधी अदब जा दौर

सिंधी अदब जे विकास खे टिनि मुख्यु दौरनि में विरिहायो वियो आहे – (1) अवाइली दौरु : प्रेम कथाउनि ऐं वीर कथाउनि जो दौरु (712 ई. खां 1520 ई. ताईं); (2) विचों दौरु : भगिती काव्य जो दौरु (1520 ई. खां 1843 ई. ताईं); ऐं (3) नओं दौरु : नसुर जो दौरु (1843 ई. खां हलंदड़ु)।

अवाइली दौरु : अठीं इस्वी सदी शुरू थियण वक़्ति सिंधु में ब्राह्मण घराणे जो आख़िरी राजा डाहरसेनु राजु कंदो हुओ। सन् 712 ई. में मुहमद बिन क़ासिम जे अगुवानीअ हेठि अरबनि सिंधु ऐं मुलतान ते हमिलो करे राजा डाहरसेन खे शिकस्त डेई, इन इलाइक़े में अरबनि जी हुकूमत बरिपा कई। उन सां गडोगडु सिंधु में इस्लाम जो फहिलाउ शुरू थियो। अटिकल टे खनु सदियूं सिंधु ते अरबनि गवर्नरनि हुकूमत कई। उन बैदि डेही सरदारनि सूमरनि (1050 ई. खां 1350 ई.) ऐं समनि (1350–1520 ई.) सिंधु ते राजु कयो। हू असुल में हिंदू राजपूत हुआ जिनि मां पोइ घणनि इस्लाम कबूल कयो।

अरबी–फारसीअ में लिखियल तारीखुनि मां मालूमु थिए थो त अठीं ईस्वी सदीअ में झूनी सिंधी बोलीअ में, महाभारत जूं कुझु कथाऊं लिखियल मौजूदु हुयूं, जिनि जो पोइ अरबी ऐं फ़ारसी बोलियुनि में तर्जुमो बि कयो वियो हुओ। इन्हनि रचिनाउनि जे हुअण जा असांखे फ़क़्ति हवाला मिलनि था. असुलोकियूं लिखियतूं हथि अची न सघियूं आहिनि, मुमकिनु आहे त ज़माने जे लाहियुनि चाढ़ियुनि में उहे नासु थी वेयूं हुजनि।

अबाइली दौर जो जेको बि सिंधी साहित्यु रोशिनीअ में आयो आहे, उहो घणो करे ज़बानी रवायतुनि ज़रिए पीढ़ीअ–ब–पीढ़ीअ हलंदो असां ताईं पहुतो आहे। उहो घणो पोइ अरिडहीं–उणवीही ईस्वी सदीअ खां वठी लिखियत में क़लमबंदि कयो वियो आहे। इन क़िस्म जे सिंधी साहित्य में प्रेम कथाऊ ऐं वीर कथाऊं घणे तइदाद में मिलियूं आहिनि. इन करे हिन ज़माने जे सिंधी अदब खे 'प्रेम कथाउनि ऐं वीर कथाउनि जो दौर' नालो डिनो वियो आहे। ससुई–पुन्हूं, सुहिणी–मेहारु, लीला–चनेसर, उमरु–मारुई, मूमल–राणो, नूरी–ज़ाम तमाची सिंधु जूं मशहूरु प्रेम कथाऊं आहिनि। दोदो–चनेसरु जो जंगनामो ऐं राइ डियाच–बीजल जी लोक कथा, मोरिड़े ऐं मांगरमछ जी लड़ाई – इहे सिंधु जे वीर कथाउनि जा कुझु मिसाल आहिनि।

हिन दौर में असां खे इस्माईली पीरनि जा 'गिनान' नाले शइर बि मिलिया आहिनि, जिनि में ज्ञान ऐं भगितीअ जी भावना मुख्यु आहे। इस्माइली पीर ऐं दरवेश बारिहीं–तेरिही ईस्वी सदीअ खां वठी सिंधु में अचण लगा। हुननि सिंधु, मुल्तान ऐं गुजरात में इस्माइली पंथ जो प्रचारु कयो ऐं घणनि ई हिन्दुनि खें पंहिंजे मज़हब में आंदो। ईस्वी सन 950 (विक्रम संबतु 1007) में सिंधु जे नसरपुर गोठ में उडेरेलाल जो जनमु थियो, जंहिं खे झूलेलाल, अमरलालु, या लालसाई नालनि सां बि सडियो वेंदो आहे। हुन ठटे जे हाक़िम मिरखमाह जे ज़ुल्मनि खां सिंधु जे हिन्दुनि जी रक्षा कई ऐं सभिनी खे भाईचारे ऐं हिंदू–मुस्लिम एकिता जो संदेशु डिनो। उडेरेलाल जो जनमु चेटी चंड जे डीह ते थियो, जंहिं खे हाणे सभु सिंधी–हिंदू

पंहिंजो क़ौमी ड॒ींहु बि करे मल्हाईंदा आहिनि। उडे॒रेलाल जी जनम साखी ऐं संदसि उस्तुतीअ. में ग॒ातल पंजिड़ा बि असुल में हिन दौर में रचिया विया, जेके जबानी रवायतुनि वसीले असां खे मिलिया आहिनि। सेव्हण जे दरवेश लाल शहबाज जे करामतुनि जा क़िसा, सिंधू नदीअ जे वहकिरे बदिलाइण बाबति ड॒ंद कथाऊं ऐं मामूई फ़क़ीरनि जा चयल अग॒कथियुनि वारा बैत पिणि अवाइली दौर जे सिंधी साहित्य जा कुझु मिसाल आहिनि।

2

कवीअ या शाइर जे पद सां कंहिंजी बि रीस या बराबरी कान्हे। ईश्वर जे सृष्टीअ में जेकी वहे वापिरे थो, तंहिंजी सुध जेतिरी शाइर खे आहे, ओतिरी ब॒िए कंहिंखे थी कान सघंदी। आलम ऐं फाज़ल माण्हूं ज्ञान सां भरपूर आहिनि, पर शाइर खे ई अन्दरिएं दृष्टीअ जो वरिसो अता थियल आहे। शाइर जो कमु न आहे प्रब॒ोध ड॒ियणु या शयुनि ऐं जीवत बाबत ज्ञान पलिटणु। हुनजो कमु आहे जग॒त जी सूंहं पसणु ऐं उन सूंहं जो मज़ो ब॒ियनि खे चखाइणु। उहा सूंहं नाना प्रकारनि जी आहे ऐं उन्हीअ सुंहं जी कथ इंसानी वटनि ऐं दुनियवी कसोटियुनि सां थियण मुश्किल आहे। हर हिक शइर जी परख पंहिंजी पंहिंजी आहे ऐं इएं चवण में वधाउ न थीन्दो त हरहिक शाइर पंहिंजी सूंहं पाण थो ख़ल्के। क़ुदरत जे बेशुमार नज़ारनि, जीवन जे जज़बनि ऐं ख्यालनि, कौलन ऐं करणयुनि मां वास वठी, शाइर पंहिंजे अन्दर में झाती पाए थो। ब॒ाहिर जो गोड़ शोर ऐं ग़ल्ग़लो, संसार जा हर घड़ीअ फिरन्दड़ चमत्कार, शाइर जे अन्दर में हिक किस्म जो विलोड़ो था विझनि। जड॒हिं वज्द जी घड़ी थी अचे, तड॒हिं उहे तजुरिबा ऐं विलोड़ा, उहे ख्याल ऐं काल, उहे सपना ऐं मुशहिदा, उहे रंज ऐं गंज वञी तरु था वठनि ऐं मथां अछ ई अछ समुंड खे विलोड़ियो आहे ऐं मंझासि अमृत रस कढियो आहे।

शाइर जो शब्द, शाइर जी ब॒ोली इन्हीअ करे निराली आहे। बेहद हुस्न खे काबू करण, सागर खे कूज़े में बन्द करण, अन्दर में छोलियुनि वांगुरु छलकन्दड़ ख्यालनि ऐं जज़बनि खे पल में पधिरो करण, न हरहिक मनुष जे वित में आहे, न हर कंहिं शब्द जे। मुरली मोहन जी सदाईं वज॒ी रही आहे, शाइर उन्हीअ खे कन ड॒िए थो। पहिंजी ब॒ोलीअ में उहो साग॒ियो रसु ऐं मेठाजु आणे थो। जा सूंहं गवयो पंहिंजे साज़ ऐं आवाज़ सां पल्टे थो, जा सूंहं हिक कामिल नकाश पंहिंजे चित्र द्वारा चिटे थो, जा सूंहं कारीगर ताजमहल जहिड़ी इमारत में ज़ाहिर करे थो, जा सूंहं अफलातून अहिड़ीअ तरह थो घड़े, जो जुग॒नि पुठियां जुग॒ निबरी वञनि, त बि अहिड़े जी अहिड़ी काइम रहे, सा साग॒ी सूंहं शाइर पंहिंजे शइर में कलमबन्द थो करे। उहे शब्द आहिनि निर्ब॒ल, पर सच पच आहिनि प्रब॒ल। जे काग़ज़ या कपिड़ी फाटो त चित्र किथे, जे आवाज़ घुटियो त गवयो किथे? जे विज॒ किरे त इमारत या उकिरियल पत्थर किथे? पर शब्द में उहा शक्ती आहे, जा सृष्टीअ जे तोड़ ताईं काइम रहन्दी, दुनिया जो कोबि ओज़ार शब्द जे महिमा जी दावा नथो रखे।

शाइर जो हरहिक शब्द पंहिंजे पंहिंजे कदुर सां आहे ऐं उहे शब्द सभु हिक अजीब ड॒ोरीअ में ब॒धल रहनि था, जंहिं ड॒ोरीअ जा अलहिदा कानून आहिनि। वज़न काफिया ऐं ब॒िया अहिड़ा ब॒न्धन के ब॒ाहिरां आन्दल कोन्हनि। उहे नियम आहिनि, जिनि जे पालण करे ई शइर जी ड॒ोर वटे सधिजे थी ऐं पुख्ती थिए थी। पर जो माण्हूं समुझे त फकत इन्हनि नियमनि जे करे कहिडा बि कचा फिका ख्याल शइर जी सूरत वठंदा या लोहार को लोह सोनारे जो सोन थी पवन्दो, तंहिंखे याद रखण खपे त इलम अरुज़ जा क़ाइदा सच पच कंहिं बि शाइर ते पाण खे ज़ोरीअ नथा मढ़ीनि। जे उन्हनि क़ाइदनि करे शहर खे मेठाज पुखतगी नसीब थिए ऐं शाइर जी सूंहं निकिरी निर्वार थिए त वाह, न त अहिड़ा क़ाइदा कहिड़े कम जा? उहे मिड़ेई भुलियल आहिनि, जे पंहिंजे नुक्तनि ऐं नकुलनि, वीचारनि ऐं वइज़नि खे काफिये ऐं वज़न जे क़ैद में काबू करे शाइरीअ जो दमु था हणनि। उन्हनि खे वाजिव आहे त शइर जो लिबास फिटो करे, नसुर जो जामो ओढीनि, जहिं मां संदनि मतिलबु त घटि में घटि सिधु थिए। हिक अंग्रेज़ी शाइर सचु चयो आहे त 'शइर जी माना आहे चीदनि लफ़्ज़नि खे चीदी सूरत में आणणु।

3

ज़माने जे गर्दिश प्राचीन देशनि ऐं क़ौमुनि जो नालो निशान मिटाए छड॒ियो; खाली असीं ई रहिजी वियासीं, जिनिजो रंग ऐं ढंग, वेस ऐं लिबास, सभ्यता ऐं धर्म काइम आहिनि। क़दीम रोम ऐं यूनान, ईरान

ऐं बैबीलान, मिस्र ऐं कारथेज शाही सल्तनतूं ऐं ऑलीशान जातियूं, सभु ज़मीन दोज़ आहिनि। उहे पत्थर ऐं कुबा बीठा आहिनि, उन्हनि सागियुनि बनियुनि में हर आहिनि, झुगा आहिनि, माण्हुनि जो गोड़ ऐं शोर आहे, पर उहो रूह कोन्हे, उहो जोहर कोन्हे, उहा असलियत कान्हे; हाणोकनि ऐं अगियनि जे विच में माइटी कान्हे, सम्बन्ध कोन्हे, निस्बत कान्हे, पर कंगाल हिन्दुस्तान, निर्बल हिन्दुस्तान, दबियल हिन्दुस्तान, सभिनी प्रकारें हज़ारें वर्हियनि जी अगीं चमक ऐं तेज वारे हिन्दुस्तान जी छाया आहे, छिडो रूप आहे, हूबहू सूरत आहे। उहो सागियो ज्ञान, सागियो धर्मु, सागी जाती मौजूदु आहिनि :

यूनान व मिस्र व रोम सभ मिट गए जहान से,
अब तक मगर है बाकी नाम व निशान हमारा,
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौरे ज़मान हमारा।

हिन्दुस्तानियुनि जे अन्दरि उहा कहिड़ी शक्ती समायल आहे, हिन्दुस्तानियुनि जे अन्दरि कहिड़ो मंत्र फूकियल आहे, जंहिं करे हीउ देश ऐं क़ौम मरी मरी वि उथनि था, ऐं न मर्ज़ न हीणाई, न बुख न बाहि, उन्हनि खे लेटाए था सघनि? कहिड़ो आहे हिन्दुस्तान जो पैग़ाम जंहिंजो आवाज़ सारे जगत में गूंजिजी रहियो आहे? को सबबि त हुन्दो जो अमर ज्योतीअ जो वरु असांखे ई मिलियल आहे! यूरोप ऐं अमेरिका अञा काल्ह निंड मां उथिया ऐं मची मुड़िस थिया। संदनि कारीगरी ऐं संदनि विज्ञान अजीब लाट कढी पर आसार ज़ाहिरु आहिनि त पुजाणी परे न आहे। हिक ई हातक जंग लगे त यूरोप ऐं अमेरिका जी सभ्यता ई शायदि सड़ी भस्म थी वञे। अहिडनि पंजनि सवनि या हज़ारनि वर्हियनि जूं सभ्यताऊं ऐं सल्तनतूं अनेक आयूं, अनेक वयूं। पर हिन्द जो तवारीख़ी ज़माने खां घणो अगु ज्ञान निकितो ऐं फहिलियो, सो कीअं काल जे चम्बे मां छुटी निकितो?

इएं न आहे त बियनि मुल्कनि ऐं बियनि जातियुनि पंहिंजो पंहिजो नारो न हंयो आहे, पंहिंजो पंहिंजो पैग़ामु न सुणायो आहे, पंहिंजो पंहिंजो जल्वो न माणियो आहे; उन्हनि खे बि फखुरु जे घड़ीअ जी हासिलात पे थी आहे। यूनान गयो गुज़रियो पर सूंहं जो सबकु सेखारे वियो। रोम मिटिजी वियो पर रोम जो क़ाइदो ऐं क़वाइद, इंतज़ाम ऐं जोड़जक, जहान में प्रसिद्ध आहिनि। मिस्र वियो पर संदसि जादू न वियो। अरब उहो अरब न रहियो पर अरब जो तोहीद वारो पैग़ामु अञा बुलंदु आहे। अंग्रेज़ हलिया बिया, पर अंग्रेज़नि जी सौदागरी कंहिं खां विसरंदी? जपान जी अवरचाई ऐं खुश खल्की, चीन जी लिताफत ऐं हथ जे हुनर, होश ऐं सहनशीलता जो वेरी बि दाद डींदा।

मतिलबु त हर कंहिं कौम पंहिंजो पंहिंजो यादगार अडियो आहे, हर कंहिं देश खे फ़ख़ुर जो सबबु पिए रहियो आहे। यहूदी क़ौम थिर थांउ न पातो, पर त बि पाणखे ईश्वर जो बोदलो कोठाईंदी आहे। यूनानी सभिनी धारियनि खे गेंवार जे नाले सडींदा हुआ, त रोम वारा त तहां मग़रूर हुआ। चीनी पंहिंजे मुल्क खे अर्श करे पुकारींदा हुआ त यूरपी कौमूं को घटि कीन पयूं। इन्हीअ रीति जे हिंद वारनि पाण खे वडो लकबु डिनो ऐं पंहिंजनि पुस्तकनि में ठहिरायो त देवताऊं बि हिन्द में जमण लाइ सिकंदा आहिनि, त का ख़ता कान कयाऊं। जाती ऐं देस जो फ़ख़ुर स्वाभावीक आहे ऐं ज़रूरी बि आहे। उहो इंसान लानती जीव आहे, जंहिंखे पंहिंजे वतन जी ख़ाक बि बियनि हंधनि जे सोन खां सर्स नथी लगे। अहिड़े मरदूद जी पदवी ऐं पैसा, शान ऐं शौकत, ज्ञान ऐं विज्ञान, व्यर्थ ऐं असमर्थ आहिनि, हिन्द वारनि खे त फ़ख़ुर लाइ काफी ऐं क़वी सबब बि आहिनि। इहोई हिक देश आहे, जंहिंजी दावा आहे त संदसि पैग़ामु अमरु आहे, संदसि जोहर मिटिजण जो न आहे। बिया देश पंहिंजो पंहिंजो नग़ाड़ो वजाए कूच करे विया, के कूच, करण वारा आहिनि, हिन्द वारनि जो खीमो सदाई लगल आहे।

4

साहित्य जहिडो यादगार ऐं इंसान ज़ात जो राखो बियो कोन थी सघंदो। दारा ऐं सिकन्दर, विक्रम ऐं नौशेरवान जहिड़नि शाहनि जो, पहलवाननि जो ऐं कारीगरनि जो; पर खुदि अवतारी पुरुषनि जो, को यादगार खड़ो करे सधिजे थो त रुगो साहित्य जे वसीले। सरीर मिटी थी वियो, खून सुकी वियो, प्राण वायूअ सां मिली वियो, माण्हूअ जो कुझु न बचियो रहियो, पर साहित्य जे वरकनि में दिमाग़ ऐं दिल, सरीर ऐं आत्मा जो तंत माल इएं उपिजियो, इएं वधियो, इएं सुगंधितु थियो, जो गुलस्तान में मिटीअ ऐं पाणीअ; पथरनि ऐं भाण, माण गुलाब जो टिड़ी बीहन्दो आहे ऐं सभिनी डिसाउनि में खुश्बू फहिलाईंदो आहे।

साहित्य – मूड़ी या सोनी मूड़ी न रुगो इंसान ज़ात जी पकी यादगार ऐं बचाव आहे पर हिकु उहो ब्रिज आहे, जितां वसीअ नज़र फेराए सघिजे ऐं इंसान ज़ात जे उनतीअ ऐं स्थितीअ जी पड़ताल करे सघिजे। जे कंहिं बि क़ौम या देश जो दर्जो जाचिणो आहे, नम्बर डियणो आहे त पहिरीं संदसि साहित्य मूडीअ जी कथ करणु वाजिबु आहे। इंग्लैण्ड बरखु थियो त शेक्सपीअर जहिड़ो साहित्यकार उन्हीअ देश में जन्मियो, रूस 'रिछ' मां माण्हूं थियो त टालस्टाइ पारो लेखक रूस में उत्पन थियो। आइरलैण्ड जे कौम खे अंग्रेज़ अहिड़ी बुछां नज़र सां डिसन्दा हुआ जो अंग्रेज़ी बोलीअ में जेकडहिं चइजे त कंहिंखे लत हणी कढीसीं त चवण में आयो त फलाणे खे आइरश इज़ाफो मिलियो आहे, जे को गोल्हण में चुक करे त चइजे त आइरश डांद आखियो आहे! पर जडहिंकर आइरलैंड में प्रसिद्ध कवि ऐं ग्रंथकार पैदा थिया, तडहिंकर अंग्रेज़ बि चुप में रहिया आहिनि ऐं आइरलैंड जे माण्हुनि खे माण्हूं करे लेखण लगा आहिनि। बंगाली बाबूअ जो ख़िताब तेसींताईं चिड़ डींदड़ ऐं हिकारत भरियल हो, जेसीं बाबू रविन्द्रनाथ टैगोर जे गीतांजली पुस्तक साहित्य जे मैदान में चहिरो न डेखारियो हो।

असां सिंधियुनि खे बि जे पंहिंजो जौहर डेखारिणो आहे, सिंधियत खे क़ाइमु रखिणो आहे ऐं हिंद में धाको जमाइणो आहे त हिन सोनी मूड़ीअ खे सांढणु खपे ऐं उन्हीअ में इज़ाफो करणु खपे। शिकस्त दिलि थी पंहिंजी सिंधी साहित्य खे फिटी करे छडणु न खपे। बराबर साहित्य जे क्षेत्र में को वेरी कोन्हे, स्वदेशी ऐं विदेशी जो फर्कु कोन्हे ऐं हरकंहिं जे बोलीऊ जो साहित्य असांखे चाह सां पढ़णु खपे ऐं दिल सां हंडाइणु खपे। रुगो इहे वीचारु करणु खपेऊं त अंग्रेज़ी ऐं फेंच, रूस ऐं जर्मन या हिन्दी ऐं बंगाली साहित्य जे मूड़ीअ जो लाभ वठी नेठि सिंधी साहित्य खे मालामाल करिणो आहे। साहित्य जो सचो अधिकारी उहो शख्सु आहे, जो पराए जी सोनी मूड़ी तके नथो, नकी धिकारे थो, जो उन्हीअ मूडीअ खे कमु आणे थो, उन्हीअ गुल मां रसु वठे थो, उन्हीअ चश्मे मां प्यास बुझाए थो, नेठि जंहिं जातीअ में जनमु वरितो अथसि, जहिं बोलीअ खे माउ जी थञु सां गडोगडु पीतो अथसि, तंहिं जातीअ तंहिं बोलीअ खे सोनी मूड़ी वरिसे में डिनी वञे थो।

5

भूमीअ भूमीअ जी महिमा पंहिंजी पंहिंजी आहे, मुल्क मुल्क जो महात्म मुख्तलिफ आहे। शिवजीअ जो आस्थान कैलाश ते ई थींदो, परियुनि जे आखाड़े लाइ कोह काफ ई सुहंदो। नदियूं मिड़ेई नदियूं, ढंढूं मिड़ेई ढंढूं, पर हर की पौड़ीअ वटि गंगा जल सां बियो कहिड़ो जल बरमेचींदो, मानसरोवर सां कहिड़ी झील कुल्हो हणंदी? यूरोप जे जंग जो क्षेत्र हर हर फलइंडरस ते थींदो ऐं हिंदुस्तान जे क़िस्मत जो फैसिलो वरी वरी कुरुक्षेत्र ऐं थानेसर, पाणीपट ऐं करनाल वटि थींदो। काशीअ जा पण्डित भलि अकाबर हुजनि पर आचार्य वरी बि डखण जा, अगे शंकर ऐं रामानुज, हींअर रामन ऐं राधाकिशन – चित्र चिटींदा चीनी ऐं रोमी, पोख पैदाइश में सर्स थीन्दा जावा ऐं स्वरण भूमी। खुशि ख़ल्क ऐं खुशी जीअरा लभंदा फ्रांस ऐं ईरान में त कारीगर जर्मनी ऐं जपान में। वापारी त इंग्लैण्ड ऐं अमरीका, एकांत ऐं एकता जो आलाप त सिंधूअ जी वादी।

इएं बराबर आहे त समे जे प्रभाव करे, प्रकृतीअ जे उथल–पुथल करे कहिं भूमीअ जो तेजु कडहिं घटि कहिं वधि थो रहे। असांजे अखियुनि अगियां इंग्लैण्ड जे चमकन्दड़ तेज ते ग्रहण जी छाया पइजी रही आहे ऐं दुहिल–दमामा, दान–पुञ, जाखोड़ा जतन, अञा त इन्हीअ ग्रहण खे मिटाइण में असमर्थ साबित थिया आहिनि। समुण्ड जो दादलो बोदलो इंग्लैंड, कौमुनि जो नकु, मुल्कनि जो मर्कजु, हिन नएं हवाई युग में फिरी रहियो आहे कुण्ड कुड़ि में धिकियलु, बियनि जो मोहताजु ऐं खौफ जो मारियलु। जाग्राफीअ जे पेच में का भूमी पेई त केरु छडाएसि?

असांजी सिंधुड़ी बि अयामनि खां समे जो शिकार थींदी रही आहे, जाग्राफीअ जे पेच में पियल आहे। जीअं सिंधु पंहिंजो वहिकिरो फेराए, तीअं सिंधूअ जी वादी या माथुरी, याने असांजी भूमी सिंधु बि पेई फिरे। सिंधु जो जेसीं हिंद सां गहिरो तालुक रहे, तेसीं खुशि रहे, खुशहाल रहे, उहो नाड़ो कपियो त वरी मुअनि जो दड़ो बणिजे। सिन्धु नालो डिनो हिंद खे, सिंधु सेखारियो वेदनि जो मूल मन्त्र 'वहदत मां कसिरत थी, कसिरत वहदत कुल', पर सिंधु जी भूमीअ खे सुख सुम्हण नसीब में न आहे। हिन्दुस्तान जे बियनि प्रांतनि में यादगार थियनि ज़मीन जे मथां ऐं ऊचे गाट, सिंधु भूमीअ जा यादगार थियनि ज़मीन हेठां ऐं दड़नि जे सूरत में। बियनि हंधि लभंदा अशोक जा थम्भा ऐं मुग़लनि जा महल, राजपूतनि जा कोट ऐं जवाहरनि जा झंझयल मन्दर, सिंधु में लभंदा मुअन (मोहन) जा दड़ा, दलूराइ जूं ज़मीन दोज़

नगिरियूं, अरोड़ जा खंडहर, भंभोर जूं भिटूं – शायद को ज़मानो अचे त सिंधी लोक दरयाह जे लट पियल पेट में खोटाई कंदे साध बे॒ले मंदर जूं मूर्तियूं ऐं संगमरमर ड॒िसी सुसि–पुसि कनि त हिते बि के संगमरमर जा टुकर हुआ छा, जे कहिं भूकंप या कुदरती कहर सबबि गुम थी विया! असां जे सिंधूअ जे गर्दिशूं डिठियूं आहिनि ऐं ड॒ुफेर, से बि॒ए कहिं दरयाह जे भाग॒ में न हूंदा। न नील न फरात न अमो दरयाह अहिडियूं माजिराऊ ड॒िठियूं, गंगाऊं ऐं गोदावरियूं त कल्ह ज॒ावल किकियूं ई सड॒िबियूं।

6

महात्मा गांधी इब्राहिम लिंकन वांगियां प्रेज़ीडन्ट कोन हो, मुल्क जे लश्कर जो महन्दार न हो, न की अहदनामा ऐं इक़रार खेसि सही करिणा पिया। उहे सभु कम बि॒यनि खे थे करिणा पिया ऐं महात्मा वाजिब न ज॒ातो त सभिनी खे रेटे पंहिंजी हले। या शायदि हुन समुझियो त कुटंब में ब॒ भाउर ठही न सघनि ऐं हुननि जी तुरशी वधी वञे त हुननि खे धार थियण में रोक न विझण खपे। की बि हुजे, देस जे अबे जे वेठे वेठे मुल्क आज़ाद थियो ऐं उन्हीअ ई मुल्क जा ब॒ टुकर थिया । पर उन्हीअ आज़ादीअ ऐं बंटवारे सां देवीअ जो टियों रूप बि प्रघट थियो। हर कहिं मूर्तीअ में त्रिमूर्ती समायल आहे ई आहे। उहो रूप हो भयंकर रूप, जंहिंखे काल जो चक्र चइजे। उन्हीअ चक्र में अनेक हिन्दुस्तानी मारिजी विया, बेवाहनि ऐं यतीमनि जूं रड़ियूं आसमान ताईं पहुतियूं, सुहाग॒णियुनि जा सुहाग॒ लुटिया विया, लखें माण्हूं दर बदर थिया। तइसब ऐं वेर, लोभ ऐं विभचार जी अग्नि भड़िकी उथी। इएं थे भायों त हिन अग्नीअ में शायदि सज॒ो मुल्क याने ब॒ई टुकरा भस्म थी वञनि। उन्हीअ आपदा जे समे बुढे ब॒ापूअ पंहिंजी जीवत जो जोहरु ड॒ेखारियो ऐं उन्हनि जो कंधु हेठि कयो, जे हुनखे ममीअ वांगुरु समुझी वेठा हुआ, पंहिंजी या पंहिंजे पाड़ेसरीअ जी पुठी ठपेरे रहिया हुआ त ड॒िसु असीं कहिड़ा न राजनीतीअ में भड॒ु आहियूं ऐं ज़माने जा उस्ताद आहियूं। बुढे ब॒ापूअ उन्हीअ लंगोट में, उन्हीअ हिक लकड़ीअ जे टेक ते ब॒रियल भंभट जे भर में पाण पहुचायो ऐं सिर तिरीअ ते खणी देहली ऐं कलकत्ते, नोआखलीअ ऐं बइरेसाल जे शरणार्थियुनि खे शर्मायो ऐं दरदरयुनि ऐं मुज़लूमनि खे वाहर कई। दुनिया जे तवारीख़ में बि॒यो अहिडो मिसाल कोन्हे जो लुचनि ऐं लफंगनि, खूनियुनि ऐं कुकर्मियनि, विष्टा ऐं विभचार भरियल दैइतनि खे हिक इंसान एतिरे कदुरु पंहिंजे सत्य ऐं अहिंसा सां, पवित्र जीवत ऐं लासानी आत्मिक ब॒ल सां, दया ऐं करुणा सां, सएं दगि॒ लातो हुजे ऐं संदनि ब॒रियल सड़ियल हृदनि ते थधो छंडो विधो हुजे। चवनि था त जनवरी 1948 में संदनि सज॒ो ख्यालु हो सिंधु ऐं सिंधियुनि ड॒ांहुं, जिनि खे 6 जनवरी फर ऐं कोस जो शिकार बणायो वियो हो ऐं जिलावतनीअ लाइ लाचार कयो वियो हो ऐं जे अञा ड॒ींहं हुजनि हा त सिंध में चरण घुमाए हा ऐं सिंधियुनि जी शेवा पाण ते हमवार करे हा।

कुदरत खे कुझु बि॒यो वणियो। अमेरीका जे अबे इब्राहिम लिंकन जो ख़ात्मो थियो हिक पाग॒ल हथां, जंहिं सज॒े मुल्क में रोज॒ राड़ो पैदा करे छड॒ियो, त असांजे देस जे अबे जो बि अंतु हिक मूढ़ल मनुष्य हथां, ऐं उन्हनि बि॒न्ही महापुरुषनि जिनि खे ई फकति देस जे अबे जो ख़िताब मिलियो आहे। पंहिंजे कोशशनि ऐं कुर्बानियुनि जो फलु न चखियो, विश्राम न पाताऊं। तंहिं में बि मालिक जो मतिलबु हूंदो। संदसि हिंसक मृत्यु करे उहो असरु पैदा थियो जो सएं सिधे मौत जे करे न पैदा थिए हा, संदसि ओचितो ग़ाइब थी वञण करे देस खे उहो धधिको आयो, जंहिं बिना हिंदु वासियुनि जा कपाट न खुलनि हा। संदसि ब॒ाहिरीं जोत जे उझामण खां सवाइ शायदि उहा जोत न जाग॒ी सघे हा, जंहिंजे तातण करे संदसि मुकररु कयल वारिस, जवाहरलाल, अजु॒ बि वेढ़ू दुनिया खे सुलह जो रस्तो बताए रहियो आहे ऐं देशवासियुनि खे जातीपणे जे ओढ़ाह में किरण खां बचाए रहियो आहे।

7

मुल्क जे विरिहाङे पुज॒ाणा सिंधियुनि जी कठिनु परीखिया थी आहे। मुंहिंजे लेखे घणे भाङे इन परीखिया मां लंघंदा पारि पवंदा वञनि था। इन आज़माइश जी आग मां सभु सलामत कीन था पहुचनि। के लहिसिजी वञनि था। छिडा भस्मु बि थी बञनि था। सेकु त सभ खे लगे॒ थो, पर अंत में संदनि नैतिक शक्ती सिंधियुनि खे ऊचनि आदर्शनि जी मंज़िल ड॒े छिकींदी वञे थी।

इहो सुभावीकु आहे। सिंधियुनि जे इतिहास जा थोरा ई के, किनि कमज़ोरियुनि जो बयानु था ड॒ियनि, त घणेई बि॒या संदनि नैतिकु ब॒ल जी साख था भरीनि। पुराणे इतिहास जी हिति मां गा॒ल्हि कोन थो करणु

धुरां। इहो त अञा मोअनि जे दड़े ऐं सिंधु जे बियनि खंडहरनि जे पट मां पुनर्जन्म पियो वठे। धीरे–धीरे संदसि छठी पेई लिखिजे। नकी की अरबनि जी काह वक़्त सिंधु जी राणी लाडी देवीअ जी सूरिहियाईअ डे इशारो थो करियां। राणीअ राजा जे क़त्ल थियण बैदि पंहिंजा सभु ज़र ज़ेवर विकिणी नई सेना तयारु करे अरबनि सां युध जारी रखी। आगाटे हिंदुस्तान जी तारीख़ में जौहर जे पहरिएं मिसाल जो वर्णनु थो करणु घुरां, जडहिं युध में हाराइण पुजाणा राणी लाडीदेवी ऐं राजाई कुल जे सभिनी ज़ालुनि महल जी हिक कोठीअ अंदर पाण खे बंदि करे पंहिंजनि हथनि सां पाण खे आग डेई अरबनि खां पाणु बचायो। आम सती प्रथा में ऐं राणी लाडीअ जे अरबनि खां पाणु बचाइण लाइ जौहरु करण में वडो फ़र्कु आहे!

कल्होड़नि, मीरनि, अंग्रेज़नि जे ज़माने जी गाल्हि आहे। डूरि डेसावरनि में वञी, अजीब–व–ग़रीबु क़ौमुनि जे विच में रही, अणजातल बोलियुनि जे अधीन थी, अनेकु डुखियाइनि खे मुंहुं डेई, कहिं पद ते पाण खे पहुचायाऊं। किथे शिकारपुर ऐं किथे ओलह चीन ऐं रूस जा डाखिणा शहर। उन्हनि शहरनि जा एविज़ी अजु रूसी सिफ़ारतुनि सां हवाईज़हाज़नि वसीले हिक डींहं में हिति रसी हिंदुस्तानु डिसण था अचनि। सदियूं अगु शिकारपुर जे वापारियुनि जूं मथियनि डूरांहनि हंधनि ते कोठियूं खुलियल हुयूं। महिननि जूं मुसाफ़िरियूं हुयूं। वाटूं औझडु, हर पहाड़ पुठियां, वणनि जे हर झुगिटे में रहज़ननि जो ख़ौफ़ु लिकलु हो। न जानि, न पैसो सलामत हो। छा त उन्हनि डींहंनि जे सिंधियुनि जी हिमथ हूंदी, छा त संदनि साहसु हूंदो जो अहिड़नि खतिरनि मां बेडपो लंघे, अहिड़ियुनि अणवणंदड़ हालतुनि हेठि रहंदे, पंहिंजी बुर्दबारीअ, सचाईअ, ईमानदारीअ जे गुणनि जी शक्तीअ द्वारां, सदियूं अगु हुननि जणु एशिया खंड जी हिक ज़बरदस्तु बैंक स्थापितु कई। हिंदुस्तान ऐं रूस जो वापार सिंधी सराफ़िकी बैंक जे इन्हनि शाखुनि वसीले हलंदो हो। जडहिं अंग्रेज़ अञा वापारिके वेस में हिंदुस्तान, अफ़गानिस्तान, बलोचिस्तान ऐं रूस घुमंदा हुआ, तडहिं सिंध जे सराफ़नि जूं हुंडियूं ई संदनि हथियो हुयूं। उहे सिंधी उन्हनि डेसावरनि में कोठियूं खोले न वेठा हुजनि हा, न हुननि ऐं बियनि विच एशियाई मुल्कनि जी पाण में बि छिडी का वाट हुजे हा।

8

अंदर में उमंगु उथियो। उमंग सां कल्पना उत्पनु थी ऐं कल्पना रूपु वरितो। उन्हीअ रूप खे कोठियाऊं कला। कला आहे गुणु ऐं गुणवानु आहे कलावानु ऐं गुण खे प्रघटु करे बियनि जे अगियां पेश करण वारो आहे कलाकारु। कंहिंजे अंदर में हूक उथी ऐं उन्हीअ हूक अखरनि जी सूरत वरिती ऐं सुंदरु वीचार सुंदरु भाषा में ज़ाहिरु थिया त थी पेई कविता। कंहिं आत्मिक प्रकाश खे सुर, गीत ऐं लइ में आंदो त थी पियो संगीतु। संगीत जो इज़िहारु किनि कयो मुख मां त किनि कयो हथनि सां। हथनि कमु कयो से साज़ बणिया ऐं साज़ सुरिया, मुख कमु कयो त भांति भांति जा रागु जुड़िया। सुर जे धुन में अची जिनि मस्तीअ में फेरियूं पातियूं ऐं हथनि ख़्वाहु पेरनि सां तालु वरितो तिनि अनोखी कला पैदा कई जंहिं खे कोठियाऊं नृतु, नाचु या रक़्सु। पथरनि खे तराश करण जे कला खे कोठियाऊं संगतराश, त लीकुनि खे रूप रंगु डियण वारी कला खे कोठियाऊं चित्रकारी। कला जी उपमा शास्त्रनि में थियल आहे। कला दातार जी देन आहे। कला उन्हीअ खे मिलंदी आहे जंहिं ते सरस्वती देवी जी कृपा थींदी आहे। कला सां झलक मिले थी क़ौम या मुल्क जे कल्चर जी। कल्चर अंग्रेज़ी अखरु आहे। तंहिंजी माना अरबीअ में आहे सक़ाफ़त ऐं संस्कृत में आहे संस्कृती। तहज़ीब, तमदुन ऐं सभ्यता जी सही माना अलगि आहे।

मुल्क में संस्कृतीअ जो प्रदर्शनु पूरीअ रीति कलाकारु कराए सघे थो। इहो ई कारण आहे जो जडहिं बि को देशु चाहे थो त बियनि देशनि खे असां जे संस्कृतीअ जो पतो पवे तडहिं कलाकारनि खे ई उहो कम सुपुर्दु कयो थो वञे ऐं उहे कलाकार पूरीअ माना में देश जा एलिची बणिजी पंहिजे कला द्वारा पंहिंजे मुल्क जो मानु मथे था कनि।

मुल्क जूं झूनियूं रीतियूं रस्मूं कहिड़ियूं आहिनि, देश जा क़िसा कहाणियूं कहिड़े बनावत ते बीठल आहिनि, क़ौम जो अदबु कहिड़े मयार जो आहे, जनता जा अक़ीदा ऐं विश्वास कहिड़ा आहिनि, जनता जे रागु यानी मौसीकी, संगीत में लुताफ़त शामिलु आहे, माण्हुनि जी पोशाक कहिड़ी आहे। संदनि हार सींगार जो सामान कहिड़ो आहे, संदनि खाधो पीतो कहिड़ो आहे, हुननि जी रहिणी कहिणी कहिड़ी आहे वग़ैरह वग़ैरह। इन्हनि सभिनी गाल्हियुनि ते कलाकारु स्थूल या सूख्यमु कला द्वारां रोशिनी विझी पंहिंजे देश जे सभ्यता, संस्कृतीअ ते रोशिनी विझे थो। इस्थूलु कला खे कोठीनि उपयोगी कला या मादी फ़नु ऐं सूख्यमु कला खे कोठीनि ललित कला या लतीफ़ फ़नु। स्थूल कला में ज़ाहिरी तौर दुनियवी

ख़ज़ाननि ऐं पंहिंजे सरीर खे सुखनि जो मालु मौजूदु हूंदो आहे ऐं सूख्यमु कला में समायल हूंदी आहे आत्मिक आनंद जी सामग्री। कला जो दर्जा ऊचो आहे। जीवन में सुंदरता खे चिटीअ तरह कला ई चिटे थी, हर देश खे पंहिंजी तहज़ीब ते नाज़ु आहे.

9

पर जे इएं आहे ऐं जमूं था इन्हीअ लाइ त मरूं, जे बकाउ कंहिं गाल्हि ते कोन्हे, त पोइ ख़ुशीअ जो नालो बि दुनिया मां निकिरी छोन थो वञे? कहिड़ी गाल्हि आहे जंहिंकरे ज़माने जे गर्दिश हेठि झुकियल इंसान बि मथो मथे खणी थो घुमे ऐं मौत जे डप ऐं हिरास में फाथलु जीवु बि हले चले पियो ऐं रखी रखी मुश्के कुश्के बि थो? को त थम्भो मिड़ेई आहे जो आदि खां वठी जीवत खे झले संओं करे बीहारे रहियो आहे ।

ओ, तूं जो रातियूं जागी कशाला कढी महिनत करे रहियो आहीं, किताबनि ते नूर निचोए रहियो आहीं, सो छाजे कारण? ए लेखक, तूं जो सूर सख्तियूं सही, फाका कढी, उहो ग्रंथु रचे रहियो आहीं, जंहिंजे छपिजण ऐं पधिरे थियण में केतिरी दिकत थींदइ, सो छा जे लाइ? ओ नकाश, कहिड़े सबिबां उहा तस्वीर लीक लीक करे चिटे रहियो आहीं? ए मालही, तूं उहो वणु पोखे रहियो आहीं ऐं थधियूं कोसियूं सही रहियो आहीं, सो छा जे कारण? ओ भगत, जंहिं प्रभूअ खे डिठो बि कोन अथई, नको कंहिं बिए डिठो आहे, तंहिंजे अगियां गोडा खोड़े जो आराधना करे रहियो आहीं, सो कहिड़े लेखे? ओ बेवह, तूं जो दर दर पिनी, पराओ पोरिह्यो करे, उन्हीअ यतीम बालक खे स्कूल में कॉलेज में पाढ़े रहियो आहीं, सो छाजे करे? ओ जर्मन उस्ताद, तूं कहिडे आधार ते पंहिंजी सहिणी सफीअ जे कवर ते चई रहियो आहीं त हिन दुनिया जा छिनल गुल वञी बिए हंधि हार में पोइबा? ए बंगाली शाइर, तूं छो थो चईं त जीवत जूं मुखिड़ियूं मौत जे मिठे मीहं करे ताज़ियूं रहंदियूं?

ए सभिनी पदार्थनि जी मट, अकेले सिर जीयारीन्दड़ बूटी, जम ऐं मौत जी उताहीं तुंहिंजे चोटीअ सां कींअ कुल्हो हणंदी? ही समुण्ड ऐं बिए दुनिया जो सागर तुंहिंजे तरे ताईं कीअ रसंदा? तो कोलंबस खे समुंड पार मोकिले नईं दुनिया प्रघट कई, तूं ई इंसानी जीवत जो थम्भो आहीं। तूं उहा शफक आहीं, जंहिंखे आगाटा इंसान सुर्ग जी डाकणि समुझंदा हुआ, तंहिं करे ई इंसान चई सघे थो त हिक भेरो डिठो अथमि ऐं हिक भेरो ख्वाब लधो अथमि, वरी डिसंदुसि, वरी पसंदुसि। हिन मिथ्या जगत में तूं ई मिथ्या न आहीं। हिन संसार में जिते हरका मिठी शइ नेठि कौड़ी आहे, जिते कोबि पंहिंजो कोन्हे, जिते वफाईअ जा कौल बीहनि नथा, जिते जप तप व्यर्थु था वञनि, तिते तूं ई आधार, वसीलो ऐं थम्भो आहीं।

उहो ईश्वरु जंहिं में डिसण खां सवाइ वेसाह था रखूं ऐं रखिणो थो पवे, जो समझूं था त मारे थो त सहण जी ताकत बि डिए थो, उहो सुर्ग जो ज़ाहिरी कंहिंखे मिलियो त कोन्हे, पर सभ कंहिं जे अखियुनि अगियां डेखारी डिए थो, उहो ख़्यालु त असांजी नीज़ारी बेज़ारी, असां जूं आहूं ऐं आसूं मिड़ेई हणी हंधि कंदा, उहे सभु तुंहिंजे करामत करे असांखे डढ डियनि था । तुंहिंजे करे जीवत जे कड़ाईअ में मेठाज अचे थो, प्रेम ज्ञान जा चश्मा जारी थियनि था, कुर्बानीअ जा कारनामा ऐं इश्क़ जा उला लाट कढनि था। ओ इंसानी जीवत जा आधार थम्भा – उमेद या आशा! शाल तूं कंहिंखे न छडीं! शाल तुंहिंजो सायो सभिनी दरदरियुनि ते हुजे, त दुखियुनि दिलियुनि में पारसीअ वाणीअ जो पड़ाडो बुधण में अचे :

ए दिल सबूर बाश मख़ूर ग़म क आकबात
ऐन शाम सुबह गरदद ऐन शब सहर शोद

(ए दिल! सबुरु करि, दुख खे न चबाड़, छाकाणि त नेठि हिन शाम पुठियां सुबुहु ईंदो ऐं हीअ राति फिरी प्रभातु थींदी।)

हिंदी के निम्नलिखित अनुच्छेद का सिंधी भाषा में अनुवाद कीजिएः

10

सिंधी में लिखे जाने वाले बाल साहित्य में ज्यादातर रचनाएँ बाल गीत और बाल कहानी की मिलती हैं। स्वतंत्रता के पूर्व सिंधी साहित्य के स्तंभ कहे जाने वाले प्रसिद्ध साहित्यकारों तथा

विद्वानों ने कहानियाँ भी लिखी थीं, परंतु उनमें से अधिकतर कहानियाँ बोधप्रद होती थीं। लेकिन स्वतंत्रता के बाद बाल कहानी को नया मोड़ मिला है। वैसे कुछ लेखक अब भी लोककथाओं का तथा लोककथाओं पर आधारित कहानियों का लेखन करते हैं। फिर भी, समय के अनुसार लिखी जाने वाली और आधुनिक संदर्भ वाली सुंदर कहानियों की सिंधी में कमी नहीं है। सिंधी में वास्तविक जगत के परिवेश वाली कथाएँ भी उपलब्ध हैं तो विज्ञान संबंधी कथाएँ भी, भले कम ही सही, उपलब्ध अवश्य हैं।

मौलिक बाल कहानियों का पहला संग्रह 'डाडीअ जूं आखाणियूं' (दादी माँ की कहानियाँ) विभाजन के पूरे 14 वर्षों के बाद वर्ष 1961 में प्रकाशित हुआ। इसके लेखक जीवत गोगिया 'जोत' थे। इसी लेखक ने बाद में 'परियुन जूं आखाणियूं' (परी कथाएँ) संग्रह वर्ष 1968 में दिया। दोनों संग्रहों में बच्चों की कल्पनाओं और आवश्यकताओं के अनुरूप अच्छी कहानियाँ शामिल हैं। आगे चलकर उनके और भी बाल कहानी संग्रह प्रकाशित हुए। 'नवानवे नंढिड़ियूं आखाणियूं' (निन्यानबे छोटी कहानियाँ – 1979), 'आखाणियू ई आखाणियूं' (कहानियाँ ही कहानियाँ – 1981), 'रंगबिरंगी आखाणियू' (रंगबिरंगी कहानियाँ – 1980), 'बिल्लीअ ऐं कूए जूं आखाणियूं' (बिल्ली और चूहे की कहानियाँ) वगैरह। 'आखाणियूं' का अर्थ है – बाल कहानियाँ।

अनेक विषयों पर लिखी गई जीवत गोगिया की कहानियाँ बच्चों का मनोरंजन करती हैं। वे एकमात्र बाल साहित्यकार थे, जिन्होंने केवल बाल साहित्य ही लिखा और उसमें भी केवल कहानियाँ ही लिखीं। जीवत गोगिया पशु–पक्षियों को पात्र बनाकर कहानियाँ लिखने के विशेषज्ञ थे। चूहा और बिल्ली उनके प्रिय पात्र थे।

प्रसिद्ध सिंधी कहानीकार ईशवर चन्दर ने भी बच्चों के लिए कुछ कहानियाँ लिखीं। उनका एक संग्रह 'नएं ज़माने जो कूओ' (नए ज़माने का चूहा) नाम से 1979 में छपा था। उसमें उनकी केवल तीन कहानियाँ हैं। हिंदी में भी उनका एक बाल–कथा संग्रह 'एक मासूम भूल' (1987) छपा है। उनकी लगभग सभी कहानियों का मुख्य पात्र 'चंपक' नाम का छोटा चूहा है। वह आज की नई पीढ़ी का प्रतीक है और बिल्ली को तरह–तरह की युक्तियाँ लड़ाकर मात देता रहता है। उनकी लेखन शैली बहुत सुंदर, भाषा सरल और आधुनिक वातावरण के अनुरूप है।

सिंधी के सुप्रसिद्ध कवि गोवर्धन भारती के दो बाल कहानी संग्रहों – 'नई बस्ती' (1963) और 'चंड ते चढ़ाई' (चाँद पर चढ़ाई – 1991)' – में दी गई कहानियाँ सरल प्रस्तुतीकरण और काव्यात्मक शैली के कारण बच्चों द्वारा पसंद की गईं। उनकी कहानियाँ 'टुंगर लोटो' (छेद वाला लोटा) बच्चों को हंसाती है तो 'रंगबिरंगी होली' जंगल के पशु–पक्षियों से मुलाकात कराती है। 'बजरंग बली' कहानी में उन्होंने खिलौनों के माध्यम से राम और रावण के युद्ध को प्रस्तुत करते हुए झूठ पर सच्चाई की जीत को प्रस्तुत किया गया।

*****